B.A. PART-1.
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य) शेषभाग-3
आधुनिक काल

प्रश्न :- भारतेन्दु-कालीन हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय देते हुए हिन्दी काव्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का स्थान निर्धारित करें ?

उत्तर - शेषभाग :-

6. सामाजिक जागरण :-

भारतेन्दु युग समाज-सुधार और जन-जागरण का युग था। भारतेन्दु की रचनाओं में स्त्री-शिक्षा, वर्ण-भेद का त्याग, अनमेल विवाह, बाल-विवाह आदि का निषेध आदि विषय मिलते हैं। 'भारत-दुर्दशा' नाटक में तत्कालीन सामाजिक दशा और उसके सुधार आदि पर अच्छा प्रकाश डाला गया है -

"जाति अनेकन करी, नीच अरु ऊँच बनायो।
खान-पान-सम्बन्ध सबन सो बरजि छुड़ायो।"

7. भाषा-प्रेम :-

भारतेन्दु तथा उनके समकालीन कवि अपने भाषा-प्रेम के लिए प्रसिद्ध हैं। भारतेन्दु ने हिन्दी भाषा में उच्चकोटि का साहित्य निर्माण किया और जनसाधारण में इसका प्रचार करते हुए इसे लोकप्रिय बनाने का सरतक प्रयत्न किया। उनका भाषा-प्रेम निम्नलिखित पंक्तियों में स्पष्ट है -

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल॥"

भारतेन्दु की रचनाओं में ब्रजभाषा और खड़ीबोली दोनों का सफल प्रयोग है। गद्य-भाषा के रूप में भारतेन्दु ने खड़ीबोली का प्रयोग किया और कविता के क्षेत्र में ब्रजभाषा का।

(8) जन काव्य -

भारतेन्दु जनता के कवि थे। उन्होंने जो कुछ भी लिखा है, वह समाज के लिए है।

इसीलिए उनकी भाषा-शैली अत्यन्त सरल है। अनेक साहित्यिक छन्दों के साथ कजरी, ठुमरी, लावनी आदि का प्रयोग कर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि उनकी काव्य-रचनाएँ केवल साहित्यकारों की वस्तु नहीं है, वरन् वे जनता के लिए है। भारतेन्दु की लोकप्रियता का एक कारण यह भी है कि उन्होंने जनसाधारण को अपील करने वाले तत्वों को काव्य में स्थान दिया है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि महाकवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाओं में भक्ति, श्रृंगार, देश-प्रेम, समाज-सुधार, हास्य-व्यंग्य आदि प्रवृत्तियाँ मिलती हैं। उनकी कविताओं में प्राचीन और आधुनिक युग की काव्य-प्रवृत्तियों का समन्वय है और भारतेन्दु इस प्रकार इन विविध प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारतेन्दु आधुनिक युग के प्रवर्तक हैं - इनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है। साथ ही भारतेन्दु ने न केवल स्वयं ही इतने बड़े साहित्य का निर्माण किया, अपितु इन्होंने एक बड़ा लेखक-मण्डल भी तैयार किया और उनकी कृतियों को पढ़ने के लिए पाठक वर्ग भी। भारतेन्दु के समकालीन लेखकों में बदरीनारायण चौधरी "प्रेमघन," प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, अम्बिकादत्त व्यास, श्रीनिवासदास, ठाकुर जगमोहन सिंह आदि का नाम उल्लेखनीय है। भारतेन्दु-मण्डल के इन कवियों ने भारतेन्दु का आदर्श अपनाया और इनकी कविताओं में उन सभी काव्य-प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं, जो भारतेन्दु की कविता में प्राप्त होती हैं। भक्ति, श्रृंगार, देश-प्रेम, हास्य-व्यंग्य, प्रकृति-चित्रण इन कवियों की सामान्य काव्य प्रवृत्तियाँ हैं। डॉ० केसरी-नारायण शुक्ल के शब्दों में भारतेन्दु-युग के इन कवियों के विषय में कहा जा सकता है - "भारतेन्दु युग के कवियों को अपने कर्तव्य तथा उत्तरदायित्व का पूर्ण ज्ञान है। इन कवियों ने अपनी अनुभूति का सच्चा वर्णन किया है।" इस प्रकार भारतेन्दु और

उनके मण्डल के साहित्यकारों का महत्व इस बात में है कि उन्होंने जीवन और साहित्य का सच्चा और निकट सम्बन्ध स्थापित किया है। भारतेन्दु युग का काव्य पूर्णरूपेण जनवादी काव्य है और युग-प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जन-जागृति के अग्रदूत।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न :- भारतेन्दु काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं हिन्दी काव्य में इनका स्थान निर्धारित करें?

पता :-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
दिनांक - 16.02.2023
मो० नं० - 7909046087